मिसाली दोस्त हबीब (अ०) इब्ने मज़ाहिर

हैदर अली (मुबल्लिग़ जामिआ इमामिया)

जनाबे हबीब, मज़ाहिर के बेटे थे जैसा कि उन्होंने रज्ज़ में फरमाया है कि "अना हबीब व अबी मज़ाहिर" और असदी क़बीले के मशहूर आदमी थे रिवायतों में उन्हें रसूल (स0) का सहाबी भी माना गया। अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम और इमामे हसन अलैहिस्सलाम के ख़ास सहाबियों में से थे। और अस्हाबे सैय्यदुश्शोहदा इमामे हुसैन (अ0) में भी आप नुमायाँ मर्तबे और कूफ़े के शीओं में बुलन्द मक़ाम रखते थे।

मुआविया की मौत के बाद शीआने कूफा की ख़्वाहिश हुई कि इमामे आली मक़ाम कूफा तशरीफ लाएँ तो इस सिलसिले का पहला ख़त सुलेमान बिन सुरदे ख़ुज़ाओी, मुसैय्यिब बिन नुह्बह, रिफाआ बिन शदाद और हबीब इब्ने मज़ाहिर दूसरे शीओं के साथ और कूफा के मुसलमानों की तरफ से फर्ज़न्दे रसूल (स0) के नाम भेजा गया था।

जब ऐलची–ए–इब्ने ज़हरा यानी जनाबे मुस्लिम कूफा पहुँचे और मुख़्तार इब्ने अबी उबैदा–ए–सक़फी के घर पर ठहर गए तो वहाँ कूफा के शीआ इकटठा हुए जिसमें मुस्लिम बिन अक़ील ने अपने आक़ा हुसैन (अ0) का ख़त पढ़कर सुनाया इसके बाद जनाबे आबिस बिन शबीब शाकरी की तक़रीर हुई जिसमें उन्होंने सिर्फ अपनी तरफ से हर तरह की मदद का वादा फरमाया इसके बाद फौरन हबीब इब्ने मज़ाहिर ने अपनी मदद का बड़े अच्छे अन्दाज़ में एलान किया।

कर्बला में नवीं मोहर्रम की शाम को जब यज़ीद के लश्कर ने इमाम (अ0) पर हमला करने का फैसला कर लिया बल्कि हमले के लिए बढ़ने लगा तो इमाम (अ0) ने अपने भाई अब्बास (अ0) से कहा कि उनसे उनके इरादे के बारे में बात करो तो जनाबे अब्बास (अ0) बीस सवारों के साथ जिनमें जुबैर इब्ने क़ैन और हबीब इब्ने मज़ाहिर भी थे मुख़ालिफीन के क़रीब गए और उनसे उनका मक़सद मालूम किया तो जवाब मिला कि इब्ने ज़ियाद का हुक्म आया है कि या तुम से बैअत ली जाए या जंग की जाए जनाबे अब्बास ने फरमाया कि मैं इमाम से पूछ कर बताता हूँ। जनाबे अब्बास (अ0) बारगाहे इमाम (अ0) की तरफ चले बाक़ी लोग अपनी जगह पर रुके रहे मौक़ा ग़नीमत जान कर हुसैन (अ0) का महबूब दोस्त हबीब अपनी दोस्ती के फ़राएज़ के एहसास के तहत मुख़ालिफ फौज को समझाना शुरु करता है कि तुम्हारा ख़ुदा के यहाँ बहुत बुरा अन्जाम होगा इस बात पर कि तुमने आले रसूल (स0) और इबादतगुज़ारों का ख़ून बहाया लेकिन उन पर हबीब की नसीहत का कोई असर इसलिए नहीं हुआ कि उनके दिलों पर मुहर लग चुकी थी।

दोस्ती–ए–हुसैन (अ0) की दौलत से मालामाल जज़्ब–ए–नुसरत व कुर्बानी से भरे हुए हबीब को रोज़े आशूर इमामे वक़्त ने अपनी मुख़्तसर रूहानी फौज की टुकड़ी का सरदार मुक़र्रर किया। कर्बला में जंग शुरु होते ही वह तिश्न–ए–जामे शहादत शख़्स थे जो बुरैरे हमदानी के साथ सबसे पहले मुक़ाबले के लिए ललकारने

पर जिहाद के लिए तैयार हुए मगर इमामे वक़्त की मर्ज़ी की वजह से बड़ी समझ रखने वाले अपनी जगह पर रुक गए।

हज़रत इमामे हुसैन (अ0) जब अपने ईमानी लश्कर के साथ नमाज़े ज़ोहर पढ़ने के लिए तैयार हुए तो मुख़ालिफ फौज से नमाज़ की मोहलत माँगी गयी जिस पर हसीन लईन ने बुलन्द आवाज़ से कहा नमाज़ पढ़ना हो तो पढ़ लो मगर वह कुबूल नहीं, बस इस गुस्ताख़ी को हबीब बर्दाश्त न कर सके और जवाब में फरमाया अरे तुझ जैसे शराब पीने वालों की नमाज़ कुबूल होगी और रसूल (स0) के बेटे जैसे परहेज़गार की नमाज़ कुबूल न होगी इस जवाब पर उस मलउन व शक़ी अज़ली ने हमला कर दिया हबीब ने उस पर वार किया वह ज़ख़्मी हुआ लेकिन बच निकला फिर हबीब ने शौक़े शहादत में रज्ज़ पढ़ना शुरु किया और फिर उस हुसैन (अ0) के मददगार ने अपनी ख़ून भरी तलवार के जौहर दिखलाए और लड़ते–लड़ते हबीब के लिए एक वह वक़्त भी आया कि हुसैन (अ0) की दोस्ती का दम भरने वाला जामे शहादत से सैराब हो गया यानी –

ज़ीस्त की दौलत ही रख दी उसने पाए यार पर
उम्र भर की बेक़रारी को क़रार आ ही गया

सोगवाराना शान से इमामे हुसैन (अ0) लाशे हबीब पर पहुँचे और क्यों न पहुँते –

दोस्त की दोस्त ज़माने में ख़बर रखते हैं

मुख़्तसर यह कि हबीब का मर जाना हुसैन (अ0) इब्ने अली (अ0) के लिए मामूली मुसीबत न थी रिवायतों में है कि हुसैन (अ0) जैसे पक्के और मज़बूत इरादे और हौसले के मालिक मुजाहिद के चेहरे पर शिकस्तगी के आसार साफ नज़र आ रहे थे। □ □ □